Kulbulahat [Hindi]

Neha Sharma

Medical student, HIMSR, Delhi
Corresponding Author:
Neha Sharma
HIMSR, Delhi, India
Email: nehas.796 at gmail dot com

Received: 14-APR-2020 Accepted: 18-APR-2020 Published Online: 19-APR-2020

Artist:
Pachay, Graphic Designer

Image source: https://www.facebook.com/Debcati/posts/10158276886511944

मेरी कुलबुलाहट भी
कम नहीं है ...
रुक जाऊं या
उड़ जाऊं मैं ...
खो जाऊं या
मिल जाऊं मैं
आँखों में सब ढका हुआ है
हवाओं में कुछ छुपा हुआ है
दुश्मन भी वो यहीं कहीं है
मेरी कुलबुलाहट भी कम नहीं है ...

फिक्रमंद हर ओर खड़े हैं
अगले कदम की सोच रहे हैं

Cite this article as: Sharma N. Kulbulahat [Hindi]. RHiME. 2020;7:45-6.

कोनों में बिखरी ख़ामोशी
रुक रुक कर कुछ ढूंढ रहे हैं
दुश्मन भी वो यहीं कहीं है
काटों पे ... या पैरों में जमीं है
मेरी कुलबुलाहट भी कम नहीं है ...

मैं जो सब्र को साथ भी ले लूँ
काटों को सासों में झेलूं
पर्दों में परतें जो छुपी हैं
मेरी कुलबुलाहट भी कम नहीं है ...

अब मेरे उस यकीं को रब
आजमा रहा और भी छुप कर
रब को मुझ में पूरा यकीं है
मेरा रब में पूरा यकीं है ...
मेरी कुलबुलाहट भी कम नहीं है
रुक जाऊँगा – मिल जाऊँगा
या उड़ जाऊँगा – खो जाऊँगा
हार जाऊं ये मुमकिन नहीं है
मेरा रब में पूरा यकीं है ...

नाप लिए हैं मुकाम लगभग
मंज़िल मेरी यहीं कहीं है
हार जाऊं ये मुमकिन नहीं है
मेरी कुलबुलाहट भी कम नहीं है ...

Acknowledgment: This poem was one of the submissions to "Picturesque: The COVID Contract" hosted online by Parwaaz, the poetry society of University College of Medical Sciences, University of Delhi, in April 2020